ओमशांति। मीठे, सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। बच्चे उनको कहा जाता है जो बाप के बनते हैं। बाप ने समझाया है– यह अंतिम मरजीवा जन्म जीते जी बाप का बनना है। यह तो बच्चे जानते हैं, श्रीमत गाई हुई है। श्रीमत भगवानुवाच्य। उस गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है; परन्तु शिवबाबा, उनके बाद ब्रह्मा, फिर कृष्ण। तो श्रीमत कृष्ण की नहीं कहेंगे। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हमारा बाप है। पतित–पावन कृष्ण अथवा राम आदि को पतित–पावन नहीं कहेंगे। वह दैवीगुण वाले मनुष्य हैं। मनुष्य को पतित–पावन नहीं कहा जाता। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे– पतित–पावन आओ। पतितों को पावन बनाने वाला एक ही बाप है, जिसके श्रीमत पर तुम चल रहे हो। प्रजापिता ब्रह्मा की मत तो मशहूर है, श्रीमत भी मशहूर है; परन्तु उनमें भूल कर देते हैं, जो बाप के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। निराकार धर्म वालों का तो एक ही बाप है। कृष्ण को तो सब नहीं मानेंगे। क्रिश्चियन लोग क्राइस्ट को फादर मानते हैं, न कि कृष्ण को; क्योंकि क्रिश्चियन हैं क्राइस्ट की मुखवंशावली। शिवबाबा आकर तुमको अपना बनाते हैं। कहते हैं– सिर हथेली पर रख बाप के बने हैं उनके डायरैक्शन पर चलने। बच्चों को उनको मत देने की दरकार नहीं रहती। वह खुद मत देने वाला है। ऐसे नहीं, यह क्यों करते? गोद में क्यों लेते? नहीं, यह तो सब बच्चे हैं। शिवबाबा नामी–ग्रामी है। वह जो मत देंगे, जो कुछ करेंगे, राइट्स ही करेंगे। इस (साकार ब्रह्मा) से भी जो कुछ कराते हैं, राइट्स ही कराते हैं; क्योंकि करन–करावनहार है न। इनको भी मत देते हैं, यह करो। तुम्हारा कनेक्शन ही शिवबाबा से है। कोई का भी अवगुण न देखना है, श्रीमत पर चलना है। शिवबाबा तो है निराकार साक्षी। उनका यहाँ तो घर है नहीं। तुम यहाँ पुराने घर में रहते हो, फिर स्वर्ग में जाकर अपने घर में रहेंगे। शिवबाबा कहते हैं– मैं तो नहीं रहूँगा। मैं तो इस समय थोड़े टाइम ले आता हूँ। तुम हो सभी सच्चे–2 रूहानी सैलवेशन आर्मी। सुप्रीम रूह बाप डायरैक्शन दे रहे हैं हूबहू ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक। कल्प–2 जो डायरैक्शन दिए होंगे, वह ही देते हैं। दिन–रात–दिन गुह्य से गुह्य सुनाते रहते हैं। नया कोई यह समझ न सके। भल 25 वर्ष से रहते हैं; परन्तु बहुत हैं इन गम्भीर बातों को समझते नहीं हैं। रोज़ नया सुनाते रहते हैं। कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। कराची से लेकर पहले बाबा मुरली चलाते नहीं थे, रात को 2 बजे उठकर 15–10 पेज लिखते थे, बाप लिखवाते थे। फिर उसकी कॉपियाँ निकलती थीं। भक्तिमार्ग में तो शास्त्र आदि के कागज़ सम्भालते हैं। दिन–प्रतिदिन बड़े किताब बनाते जाते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं! वह फिर पढ़कर रखते हैं। तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो, नहीं तो यह वर्शन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए; परन्तु नहीं जानते हैं। यह सब विनाश हो जाने हैं। चित्र आदि भी जो यह तुम बनाते हो, थोड़े समय के लिए हैं। फिर यह दब जावेंगे। वहाँ न शास्त्र, न चित्र आदि कब भी नहीं रहते। फिर यह जो कुछ चल रहा है, कल्प बाद भी होगा। शास्त्र आदि फिर द्वापर से शुरू होंगे, जिनके लिए बाप समझाते हैं– यह सब झूठे हैं। ऐसे नहीं, कोई ग्रंथ आदि पढ़ने से परमधाम का रास्ता मिलता है। बिल्कुल नहीं। ग्रंथ भी आगे तो हाथ से लिखा हुआ बहुत छोटा था। अब बड़े ग्रंथ बनाय गए हैं। दिन–प्रतिदिन बड़ा बनाते जावेंगे, नहीं तो शिवबाबा की जीवन कहानी कितनी लिखनी चाहिए। अभी तुम बच्चे कहते हो, प०पि०प० की जीवन कहानी जानते हैं? बाप बैठ समझाते हैं– मैं भक्तिमार्ग में क्या करता हूँ! भक्तिमार्ग में भी इन्श्योरेन्स करता हूँ। ईश्वर अर्थ मनुष्य दान–पुण्य करते हैं न! कहते हैं न– इसने दान–पुण्य किया है ईश्वर अर्थ; इसलिए ईश्वर ने बड़े घर में जन्म लिया(दिया) है। भक्तिमार्ग में भी धर्मात्मा बहुत होते हैं, ईश्वर अर्थ, श्री कृष्ण अर्थ दान–पुण्य करते हैं। बाबा फिर कहते हैं, मैं बच्चों को दूसरा जन्म में उसका अल्प काल लिए फल देता आया हूँ। अच्छा व बुरा फल मिलता है न! कितना

बड़ा इन्श्योरेन्स हुआ। जो जैसे कर्म करते हैं उस अनुसार फल मिलता है। माया उल्टा कर्म कराती है, जिससे तुम दुःख को पाते हो। अब मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो कभी दुःख न होगा और वहाँ माया भी नहीं होती। बाकी है मर्तबा, जो जितना इन्श्योर करें। शिवबाबा भी ट्रस्टी है न! नम्बरवन ट्रस्टी हैं। दूसरे की आसक्ति जावेगी। कोई ट्रस्टी किसका खाना खराब कर देते हैं। बाप तो देखो, कैसा ट्रस्टी है! कहते हैं, यह सब कुछ बच्चों के लिए है। तुम्हारा सारा कनेक्शन शिवबाबा से है। बाप कहते हैं– मैं सच्चा ट्रस्टी हूँ। मैं खुद सुख नहीं लेता हूँ, बच्चों को सारी राजधानी दे देता हूँ। लौकिक बाप सब कुछ लेकर बाकी वैलस(दौलत) वर्से में बच्चों को दे जाते हैं। मैं तो स्वर्ग में कुछ भी नहीं लेता हूँ, तुमको ही सब देता हूँ। तो तुम्हारा कनेक्शन सारा शिवबाबा से है। (य)ह बाबा कहते हैं– मैंने यह फुल इन्श्योर कर दिया। तन–मन–धन सब बाप की सर्विस में है न! सिंधी में एक पहाका भी है– हाथ जिनका ऐसे पहला पूर को पहुँचेंगे। बाप के पास सब इन्श्योर करना है। दो मुट्ठी चावल दे तो महल बन गया। अभी देखो, मकान बना है। कोई ने एक रु. भेजा कि हमारी भी ईंट लग जा(ए)। अरे, तुमको तो सबसे अच्छे महल मिलेंगे; क्योंकि तुम गरीब हो। मैं हूँ ही गरीब निवाज़। गरीब का एक रु. और साहुकार का 10 हज़ार, दोनों को ही एक मर्तबा मिल जाता। साहुकार बहुत मुशकिस(मुश्किल) आते हैं। सबसे कन्याएँ तो बिल्कुल फ्री हैं। नम्बर वन देखो मम्मा गई। उनके पास तो कुछ भी न था। गरीब के घर की थी, फिर भी नम्बरवन चली गई। बाबा, जिसने सब कुछ दिया, फिर भी पहले ल० फिर ना०– कितना वण्डरफुल खेल है! तो कब भी किस बात में संशय न होना चाहिए। बापदादा कोई कम थोड़े ही है। ज़रा भी संशय उनमें न लाना चाहिए। बहुत मीठा भी बनना है। कदम–2 पर श्रीमत लेनी है, नहीं तो माया बहुत नुकसान कराय देती है। कितने बच्चों को डायरैक्शन देने पड़ते हैं। बाबा कहते हैं, पूरा समाचार लिखो। बाबा हर प्रकार की सम्भाल करेंगे। बाबा को बहुत ख्याल रहता है– कहाँ यह बच्चा चढ़ जाय। पढ़ाई पर पूरा अटेन्शन चाहिए। हम हैं मोस्ट बिलवेड गॉड फादरली स्टूडेंट्स। भगवानुवाच्य भी लिखा हुआ है; परन्तु कृष्ण का नाम डाल दिया है। कृष्ण भी सब मनुष्यों से ऊँच ते ऊँच ठहरा। फर्स्ट प्रिन्स है। कृष्ण का नाम देते हैं, नारायण का क्यों नहीं? कृष्ण है बालक छोटेपन में। बालक सतोप्रधान होता है। फिर बचपन से युवा, वृद्ध अवस्था आती है। बच्चे की ही महिमा करते हैं; क्योंकि प्युअर है न! बालक ब्रह्मज्ञानी समान कहते हैं न! बच्चे से कोई पाप नहीं होता है। तो कृष्ण भी छोटा होने कारण इनका बर्थ मनाते हैं। सो भी श्री कृष्ण को धकेल दिया है द्वापर में। यह सब बैठ बाप समझाते हैं। ऐसा दुनिया में कोई नहीं होगा सिवाय तुम ब्राह्मणों के। ब्राह्मण हैं उत्तम। तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय संतान। सतयुग में ईश्वरीय संतान नहीं कहलाएँगे। ईश्वर से ज़रूर स्वर्ग की प्राप्ति होगी। यह है तुम्हारा अति अमूल्य दुर्लभ जीवन। सबका तो नहीं हो सकता। यह ड्रामा ऐसा बना हुआ है, जो कल्प पहले पढ़े थे वह ही पढ़ रहे हैं। भगवान ने ज़रूर भगवती–भगवान पैदा किए; परन्तु भगवान–भगवती कह नहीं सकते। गॉड इज़ वन– उस निराकार की ही सारी महिमा है। साकार की थोड़े ही महिमा होती है। इन ल०ना० को निराकार ने ऐसा बनाया। तुम बच्चे जानते हो, बाप द्वारा स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं, राजयोग सीख रहे हैं। बरोबर गीता में राजयोग है। राजाई स्थापन हुई तो उस समय विनाश भी हुआ था। बाप ज़रूर स्वर्ग का वर्सा देंगे। वो अब है संगम की बात। शिवबाबा आते हैं, तो खेल पूरा होता है, तो कृष्ण का जन्म होता है। मनुष्य तो बिचारे मूँझ गए हैं, तब तो बाप आए समझाते हैं। प०पि०प० ब्रह्मा द्वारा सभी शास्त्रों का सार बताते हैं। यह सब झूठे शास्त्र आदि पढ़ना, इससे वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी होती है। भक्तिमार्ग में बड़े मंदिर बनाते हैं। उन मंदिरों में पद्मों की मिल्कियत थी। अभी

तो सब लोप हो गए हैं। भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ने, तीर्थ यात्रा करने, मंदिर बनाने, कितना खर्च करते हैं। खर्चा करते–2 अब भारत कंगाल बन पड़ा है। अभी तुम जैसे मास्टर नॉलेजफुल हो गए हो। आत्मा की ही महिमा है। ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, सुख का सागर, ब्लिसफुल है– यह बाप की महिमा गाई हुई है। बाप कहते हैं– यह भारत तो सबसे अच्छा तीर्थ स्थान है; परन्तु कृष्ण का नाम डालने से सारा मान कम कर दिया है। नहीं तो सभी शिव के मंदिर में फूल (च)ढ़ाते। सबका सद्गति दाता वह एक है। आधा कल्प तुम प्रालब्ध भोग फिर दुर्गति में आते हो। सबको तमोप्रधान बनना ही है। अब बाप कहते हैं– जो बैग एण्ड बैगेज हैं, सब दो तो तुम्हा(रा) ट्रांसफर करके दें नई दुनिया में। हम खुद तो नहीं लेते हैं, साफ बात है। मनुष्य तो अपने लिए करते हैं, फिर कहते हैं– हम निष्काम करते हैं; परन्तु निष्काम तो कोई कर न सकते। हर चीज़ का फल ज़रूर मिलता है। मैं तो तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्न देता हूँ। तुम्हारे लिए ही वैकुण्ठ लाया है। बच्चों को सॉवरंटी का (सॉ)विनियर बनते(बनाते) हैं। तो वह लेने लिए ऐसा लायक बनना चाहिए। स्वर्ग का मालिक बनना है। तीरी पर बहिष्त मिलता है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अथवा सेकेण्ड में बादशाही। दिव्य दृष्टि दाता शिवबाबा है। सेकेण्ड में वैकुण्ठ में ले जाते हैं। इस बाबा के हाथ में कुछ भी चाबी नहीं है। बाप कहते हैं, मैं तुम बच्चों को राजाई देता हूँ, मैं नहीं करता हूँ। फिर जब तुम भक्तिमार्ग में जावेंगे तब तुमको दिव्य दृष्टि से बहलाना पड़ेगा। कितना अच्छी रीति समझाते हैं। ऐसा बाबा कल्प–2 कल्प के संगमयुगे, एक ही बार आते हैं। बाकी इतने अवतार आदि हैं सब गपोड़े। यह शास्त्र हैं सब भक्तिमार्ग के। वह भी बनी–बनाई बन रही, अब कुछ बननी न। जो कुछ होता है ड्रामा में नूँध है। इसको साक्षी हो देखो। बाबा बहुत अच्छी रीति समझाते हैं– बच्चे, मैं तुम्हारा इन्श्योर मैगनेट हूँ। तुम्हारी एक पाई भी नहीं गँवाता हूँ। कौड़ी से तुमको हीरे तुल्य बनाता हूँ। यह सब शिवबाबा करते हैं इनके द्वारा। करन–करावनहार वह है। निराकार और निरहंकारी वह है। गॉड फादर कैसे बैठ पढ़ाते हैं! ऐसे नहीं कहते, चरणों में पड़ो। बाप ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट है। बाप कहते हैं, जिनको मालिक बनाया, वह सुख भोग–2 अब दुःखी हुए हैं। सुख भी बहुत मिलता है! इतना सुख कोई धर्म को नहीं मिलता। ऐसे नहीं कह सकते कि भारतवासियों को क्यों? औरों ने क्या किया? अरे, इतने ढेर मनुष्य हैं, सब तो नहीं आ सकते। यह ड्रामा बना हुआ है। भारत ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। भगवान ने आकर सहज राजयोग सिखाया था। बाप कहते हैं, मैं फिर से आया हूँ। तुम भी जानते हो, 84 जन्मों का पार्ट बजाया, अब फिर से हम घर जाते हैं। यह बहुत पुराना चोला हो गया है। (सर्प का मिसाल) सन्यासी लोग फिर कहते, आत्मा सो परमात्मा में लीन हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में रहते–2 फिर शरीर छोड़ देते हैं; परन्तु ब्रह्म में लीन तो कोई होता नहीं; परन्तु उनमें कोई–2 बहुत तीखे होते हैं, शांत में बैठ शरीर छोड़ जाते हैं तो उसका वायुमण्डल में माइल दो/तीन तक सन्नाटा हो जाता है। तुम तो जानते हो, यह पुराना शरीर छोड़ बाबा के पास जाते हैं। ब्रह्मा तो बाबा नहीं। यह उन बिचारों का भ्रम है; जैसे हिन्दुओं का यह भ्रम है कि हम हिन्दू धर्म के हैं। अरे, हिन्दू धर्म फिर कहाँ से आया? वह तो हिन्दुस्तान का नाम है। सतयुग में एक ही धर्म था। अब तो देखो, कितने धर्म हैं! कितनी भाषाएँ हैं! वहाँ तो भाषा भी एक होती है। कहते भी हैं, वन गवर्मेन्ट हो; परन्तु सभी गवर्मेन्ट वन थोड़े ही होगी। ब्रदरहुड भी नहीं समझते। सर्वव्यापी कह देते तो फादरहुड हो गया, फिर खुद फादर "ओह फादर" कहकर किसको बुलाएँगे! यह सर्वव्यापी की नॉलेज मूर्खता की ही है। मूर्ख माया बनाती है। अच्छा, बापदादा, मीठी माँ का मीठे बच्चों को यादप्यार और गुडमॉर्निंग।